ऑडियो नं. 279 कलकत्ता

याद की विधि

(पुरानी सच्चीगीता खंड–2 'याद की विधि' प्रकरण का क्लैरिफिकेशन)

(बीकेज़ और पीबीकेज़ के लिए)

सही तरीके से याद करते हैं कि नहीं करते हैं तो शशोपंज में बने रहते हैं। तो आज हम देखते हैं कि बाबा ने मुरलियों में क्या बताया है याद के बारे में। एक्यूरेट याद क्या है? याद की विधि क्या है? बोला है– कोई भी चीज़ जब साकार में देखी जाती है तो जल्दी ग्रहण कर सकते हैं, बुद्धि से सोचने की बात देरी में ग्रहण होती है। यहाँ भी साकार रूप में जिन्होंने साकार को देखा उन्हों को याद करना कितना सहज है। तो सहज याद करना अच्छा है या कठिनाई से याद आए वो ज़्यादा अच्छा है? कठिनाई से याद आएगी तो निरंतर याद नहीं हो सकती और सहज याद आएगी तो याद निरंतर भी हो सकती है। शरीर का तो कोई भरोसा नहीं कब छूटे। तो जब शरीर छोड़ने का ही भरोसा नहीं है तो निरंतर याद ही असली याद है और वो तब होगी जब याद करना बहुत सहज हो जाए। सहज का मतलब ये है कि याद करना मुश्किल न हो; लेकिन याद भूलना मुश्किल हो जाए। जैसे प्रैक्टिकल जीवन में किसी का किसी से प्यार हो जाता है तो क्या भूलता है? भुलाना चाहते हुए भी भूलता है क्या? नहीं भूलता है ना! कभी किसी से पूछने जाता है, कैसे याद करें? याद करने की विधि क्या है? जहाँ दिल लग जाता है, जहाँ लगन लग जाती है, जहाँ लगाव लग जाता है प्रैक्टिकल जीवन में, वो स्वतः ही याद आता है। इसलिए यहाँ अव्यक्त वाणी में बोला कि **"जिन्होंने साकार रूप में साकार को देखा उन्हों को याद करना सहज होता है"**। तो आदि में साकार था और अंत में भी, जो आदि में हुआ सो सब अंत में भी होता है।

हर एक को डायरैक्ट बाप से वर्सा लेना है। इनडायरैक्ट बीच में कोई बिचौलिया नहीं चाहिए। वर्सा लेना है बच्चों को। और किससे लेना है? बाप से वर्सा लेना है। दीदी, दादी, दादाओं से वर्सा नहीं लेना है। डायरैक्ट बाप से वर्सा लेना है। बीच में अगर कोई बिचौलिया है तो डायरैक्ट बाप से वर्से के अधिकारी नहीं हुए। जो डायरैक्ट बाप के वर्से के अधिकारी हैं वो ही रुद्रमाला के मणके हैं। जितना–2 व्यक्तिगत बाप को याद करेंगे उतना वर्सा मिलेगा। व्यक्तिगत बाप माना व्यक्ति में आया हुआ बाप; अव्यक्त में आया हुआ नहीं। व्यक्तिगत माना जितना बाप को पर्सनल याद करेंगे, पर्सनैलिटी चाहिए बाप की। बाप भी कोई पर्सन है, पर्सन बनकर के आता है माना व्यक्ति बनकर के आता है हमारे सामने, उसे हमको याद करना है।

ऐसे याद करो जैसे कन्या की सगाई होती है, तो कन्या की जब सगाई हो जाती है तो याद बिल्कुल छप जाती है। बच्चा पैदा होता है और याद छप जाती है। तो ये प्रैक्टिकल जीवन की बात बताई। (किसी ने कुछ कहा– ...) ये एक अलग बात। याद की विधि क्या है, तो कन्या का मिसाल दिया। माना सम्बंध प्रैक्टिकल में चाहिए। कन्या की जब सगाई होती है तो नाम भी बताया जाता है। लगन कब लगती है? जब उसे नाम बता दिया जाता है, धाम बता दिया जाता है, उसका काम बता दिया जाता है, उसका फोटो भी दिखाय दिया जाता है और कहीं–2 तो एक–दूसरे को आपस में मिलाय भी दिया जाता है, तो सगाई पक्की हो जाती है। उसको कहते हैं लगन। जब लगन पक्की हो जाती है तो याद छप जाती है। जैसे कोई छापा मार दिया जाता है ना! ऐसे बुद्धि में याद छप जाती है। ठप्पा लगाई हुई चीज़ भूलती नहीं है। तो ऐसे ही याद करना है।

नाम भी पता हो। ऐसे नहीं वो सर्वव्यापी है, सबमें आता है। नहीं। बिना नाम–रूप के कोई चीज़ नहीं होती, उसका कोई अस्तित्व नहीं होता। परमात्म पार्ट अगर है तो उसका एग्ज़ेक्ट नाम भी होना चाहिए, जो संसार में विख्यात हो जाए। उसका रूप भी होना चाहिए। उसका रहने का कोई स्थान भी होना चाहिए। स्थान विशेष से ही परमात्मा बाप प्रत्यक्ष होते हैं। उनकी जन्मभूमि, उनकी कर्मभूमि, सब प्रत्यक्ष होनी चाहिए। तो नाम भी चाहिए, रूप भी चाहिए, धाम भी चाहिए, उसके गुण भी चाहिए। और वो क्या–2 काम करता है? इस सृष्टि पर आता है तो कुछ काम करके जाता है या जैसे सामान्य मनुष्य आते हैं इस सृष्टि पर, धर्मात्माएँ आते हैं या धर्मपिताएँ आते हैं, उनके मुआफिक आकर के चला जाएगा? इस सृष्टि रूपी मकान की थोड़ी–सी मरम्मत करके, थोड़ा–सा रिफॉर्मेन्स (सुधार) करके चला जाता है? नहीं। फिर उसे परमात्मा कौन मानेगा?

धर्मात्माएँ तो बहुत हैं दुनियाँ में, महात्माएँ बहुत हैं, धर्मपिताएँ बहुत हैं; लेकिन जिसको परमात्मा कहा जाता है वो तो इन सबसे विशेष होना चाहिए और विशेष होगा तो ज़रूर कोई विशेष काम भी

करके जाएगा। तो वो विशेष कार्य भी करके जाता है। ऐसा विशेष कार्य करके जाता है जो कोई धर्मपिता, धर्मात्मा, महात्मा नहीं करके गया हो। ऐसे नहीं कि परमात्मा आता है और ज्ञान सुना के चला जाता है और विशेष कार्य कुछ भी नहीं, सृष्टि का परिवर्तन होता नहीं, नई सृष्टि आती नहीं, स्वर्ग दिखाई पड़ता नहीं और हम कह दें कि परमात्मा आया; 69 में चला गया। तो वो परमात्मा का पार्ट नहीं है। परमात्म पार्ट प्रैक्टिकल में किसी पर्सन में चाहिए ऐसा, जो ऐसा पार्ट बजाकर के जाए। जैसे–2 परमात्मा के नाम वैसे–2 काम करके जाए। तो ऐसी याद छपी हुई होनी चाहिए बुद्धि में।

मुख से शिवबाबा कहना नहीं है यानि बुद्धि के अंदर याद छपी हुई होनी चाहिए। मुख से बाबा–2 बाबा–2 कहना इसका मतलब है कि 63 जन्म मुख का जो रट्टा लगाते रहे, मुख में राम बगल में छुरी, वो बात न हो जाए। मुख से नाम लेना बहुत सहज होता है। वो एक स्थूल बात हो गई। परमात्मा तो अति सूक्ष्म है। आत्मा से भी अति सूक्ष्म पार्ट बजाने वाला परमात्मा है। तो उसको तो बुद्धि रूपी यंत्र से ही कैच किया जा सकता है। बुद्धि से ही उसे याद करना है। मुख से बोलने की ज़रूरत नहीं है। बुद्धि से याद करना है। माँ जब बच्चे को याद करती है तो क्या बच्चा–3 या बच्चे का नाम लेकर के पुकारती है? नहीं। बुद्धि में याद आती है, उसका कर्तव्य याद आता है, उसकी तोतली बोल–चाल याद आती है, उसकी भाषा याद आती है। तो ऐसी याद छपी हुई होनी चाहिए। मुख से नहीं कहना चाहिए शिवबाबा–3। जैसे आशुक–माशूक एक–दूसरे को याद करते हैं, एक बार देख लिया बस, फिर बुद्धि में उन्हीं की याद छप जाती है। सिर्फ़ एक बार देखने की ज़रूरत है। बहुत से ऐसे प्रेमी होते हैं जीवन में एक बार ही उनका मिलना या देखना होता है और जीवन में फिर कभी दोबारा मिलते भी नही हैं; लेकिन जीवनभर उनकी याद छूटती नहीं है। एक बार की याद, एक बार का देखना, एक बार की अनुभूति, सदाकाल के लिए स्थायी बनाई जा सकती है। ऐसी लगन पक्की होनी चाहिए।

बाबा कहते हैं– मुझे निरंतर याद करो। अंतर नहीं पड़ना चाहिए। अंतर कब पड़ता है? बाबा को याद करते–2 63 जन्मों के जो संस्कार हैं दूसरी–2 आत्माओं के संग में आने के, संग का रंग दूसरी आत्माओं के साथ भी तो लगाया है ना कि हर जन्म में हीरो के साथ ही संसर्ग–सम्पर्क हुआ? ऐसा तो होता नहीं। 63 जन्म हुए या 84 जन्म हुए, ऐसी तो कोई आत्मा नहीं है जिसका हर जन्म में एक हीरो पार्टधारी के साथ ही संसर्ग–सम्पर्क रहा हो। हाँ, ये हो सकता है किसी का ज़्यादा रहा हो और किसी का कम रहा हो। जिसका ज्यास्ती संसर्ग–सम्पर्क उस श्रेष्ठ आत्मा के साथ रहा उसको ज्यास्ती याद छपेगी और जिसका कम संसर्ग–सम्पर्क रहा उसकी बुद्धि में निरंतर याद नहीं टिकेगी। जिन–2 आत्माओं के साथ उसने सम्बंध जोड़ने की प्रैक्टिस की है वो आकर के बीच में अंतर पैदा कर देंगी। अपना हिसाब–किताब आकर के लेंगी। बुद्धि में इन्टरफियरेंस पैदा करेंगी। तो वो अंतर डाल देंगी। याद निरंतर नहीं हो पाएगी। लेकिन बाप कहते हैं मुझे निरंतर याद करो। जब निरंतर याद करेंगे तब तुम्हारे पाप तेज़ी से भस्म होंगे। जैसे सोना है, सोने की खाद निकाली जाती है। सुनार सोने को अग्नि में डालता है। एक बार तेज़ अग्नि जलाए फिर बंद कर दे, फिर तेज़ अग्नि जलाए फिर बंद कर दे माने बार–2 अग्नि जलाए और बार–2 उसको ठंडा कर दे तो उसमें से खाद निकलेगी? नहीं निकलेगी। लगातार की जितनी चाहिए उतनी लगातार उसको तेज़ अग्नि चाहिए। मध्यम अग्नि भी नहीं चाहिए। तो ये परमात्मा बाप के प्रति लगन की अगन तीव्र चाहिए और साथ–2 निरंतर चाहिए।

सुमिरण नहीं करना है; याद करना है। याद में और सुमिरण करने में बहुत अंतर है। सुमिरण मुख से किया जाएगा– शिवबाबा–2 या अंदर से बोलेंगे, ओठ चलते रहेंगे। वो सुमिरण करना कोई याद करना नहीं है। सुमिरण करने में हाथ और मुख चलता है। जैसे भक्त होते हैं, राम का नाम सुमिरण करते हैं तो माला घुमाते जाते हैं और मुख से ओठ चलते जाते हैं। तो वो सुमिरण अलग बात है। लेकिन मन–बुद्धि में याद होनी चाहिए। वो याद दिल से आनी चाहिए। बाबा हमेशा कहते हैं कि ऐसे समझो कि शिवबाबा के डायरैक्शन हमको मिलते हैं। **ऐसे समझो।** क्यों? समझने की क्या बात है? जब शिवबाबा हमको डायरैक्ट मिला हुआ है तो समझने की क्या बात? समझने की बात ये है कि बाबा हमको मिला तो हुआ है; लेकिन हमारी सराउण्डिंग्स में जो आत्माएँ रहने वाली हैं वो सब एक जैसी निश्चय बुद्धि नही हैं। सबके निश्चय में फ़र्क है। अंतर वाली हैं। तो उनके संग के रंग में आने से हमारा निश्चय भी ऊपर–नीचे होता रहता है। इसलिए बोला कि हमेशा ऐसे समझो कि शिवबाबा के डायरैक्शन मिलते हैं। दूसरी आत्माओं के संग के रंग में आने से हमारी बुद्धि में से ये बात निकल जाती है कि हमको ये बाबा, शिवबाबा डायरैक्शन दे रहा है। हम समझ लेते हैं साधारण व्यक्ति। और जब साधारण व्यक्ति का डायरैक्शन समझते हैं तो उसमें अलबेलापन आ जाता है; मानने में।

परमात्मा का डायरेक्शन और उसको मानने में हम देर करें तो जैसे सड़ा हुआ फल हो गया। ताज़ा फल को खाना और सड़े हुए फल को खाना, कितना अंतर पड़ेगा? ताज़े फल को खाने से पावर

ज़्यादा आती है, विटामिन्स उसमें ज़्यादा होते हैं और सड़े हुए फल को खाने से नुकसान हो सकता है। आधा सड़ा हुआ होगा तो आधा फायदा करेगा, आधा नुकसान कर देगा। इसलिए जो डायरैक्शन मिलता है उसे तुरंत फॉलो करना– ये है निश्चय बुद्धि की निशानी। अगर सदैव ये समझेंगे कि हमको शिवबाबा के डायरैक्शन मिलते हैं तो सदैव तुमको शिवबाबा याद रहेगा। ये भी एक विशेष बात बता दी। डायरैक्शन फॉलो करने में अगर देर करेंगे तो याद में भी अंतर पड़ता रहेगा। अगर डायरैक्शन को तुरंत फॉलो करेंगे और तुरंत फॉलो करने के संस्कार बनाते जावेंगे तो याद निरंतर आती रहेगी। उनके डायरेक्शन कब भी उलंघन नहीं करने चाहिए। डायरेक्शन को देर में मानना वो तो बहुत दूर की बात हो गई; लेकिन उलंघन भी कभी नहीं करना है। अगर बाप के डायरैक्शन को उलंघन किया तो सौ गुणा, हज़ार गुणा, लाख गुणा बोझा चढ़ता है। जैसे कोई छोटा–मोटा व्यक्ति हमको डायरैक्शन दे और हम उसको उलंघन कर दें तो उतनी सज़ा के भागीदार नहीं बनेंगे और कोई बड़े ऑफिसर की पकड़ में आ गए और उसके सामने हमने नाफ़रमानी कर दी तो वो तो पकड़ लेगा, डिसमिस कर देगा। बहुत भारी घाटा पड़ जावेगा।

शिवबाबा तो राजाओं का राजा बनाने वाला है। राजाओं का राजा–महाराजा बनाने वाला है। उसके सामने तो कितना केयरफुल रहना चाहिए। उन छोटे–मोटे राजाओं के सामने जाने में लोग थर–2 काँपते हैं और ये तो बड़े–2 राजाओं को महाराजा बनाने वाला है। उसके डायरैक्शन को तो फौरन फॉलो करना चाहिए, तो अवस्था भी बहुत ऊँची रहेगी याद की। अवस्था अप एण्ड डाउन कब होती है? जबकि हम बाप के डायरेक्शन को, डायरेक्टर का डायरेक्शन है। सृष्टि रूपी रंगमंच का जो ड्रामा है उसका एक बड़े ते बड़ा डायरेक्टर है, उसके डारेक्शन को हम फॉलो करने वाले ऊँचे ते ऊँचे एक्टर हैं– ये बात अपनी भूल जाते हैं।

अच्छा, परमात्मा जिसको तुम याद करते हो वो क्या चीज़ है? कोई चीज़ है या नाचीज़ है? अगर समझोगे कि वो भी कोई चीज़ है, कोई चीज़ है कि नाचीज़ है? कोई चीज़ है। तुम कहते हो– वो अखण्ड ज्योति स्वरूप है। भक्तिमार्ग में कहते हैं ना कि परमात्मा तो अखंड ज्योति स्वरूप है। अखंड ज्योति स्वरूप का मतलब क्या हुआ? बाप तो कहते हैं मैं कोई अखंड ज्योति स्वरूप नहीं हूँ। कोई स्थूल ज्योति नहीं है जो अखंड रूप से जलती रहती है। अखंड ज्योति को याद करना ये रॉंग हो जाता है। क्या? कास्केट को सामने दिवाल पर लटका दिया, उसमें बल्ब जला दिया, रात भर बल्ब जल रहा है और हम जब उसे देखते हैं तो उसको याद करते हैं। वो अखंड ज्योति किसी–2 के कमरे में 24 घंटे जलती रहती है। उसको देख–2 करके याद करते हैं। तो ये राइट है क्या? बाप कहते हैं उस अखंड ज्योति को याद करना रॉंग हो जाता है। क्यों? क्यों रांग हो जाता है? क्योंकि वो कोई स्थूल ज्योति नहीं है। ज्योति का मतलब है ज्ञान की ज्योति। स्थूल ज्योति या ज्ञान की ज्योति? वो ज्ञान का सागर है ना! तो वो अखंड ज्ञान की ज्योति उसमें जलती रहती है माना उसका ज्ञान जो है कभी खूटता नहीं है। ऐसी अखंड ज्योति है ज्ञान में। बाकी कोई स्थूल ज्योति को याद करना ये बाबा ने नहीं सिखाया। याद तो एक्यूरेट चाहिए। सिर्फ़ गपोड़े मारने से काम नहीं चलेगा। एक्यूरेट बाप को जानना चाहिए। बाप कोई जड़ ज्योति का तत्व नहीं है, जिस जड़ ज्योति को तुम याद करते हो। बाप कैसी ज्योति है? ज्ञान की ज्योति है। बाप की जो पर्सनैलिटी (व्यक्तित्व) है वो पर्सनैलिटी (व्यक्तित्व) ऐसी है जिसमें ज्ञान की ज्योति सदैव जलती रहती है। ऐसे उस ज्ञान सागर बाप को हमें याद करना है।

तुम जानते हो कि वो ब्रह्मा के तन में है। किसके तन में है? ब्रह्मा के तन में। क्यों? ब्रह्मा ने तो शरीर छोड़ दिया, ब्रह्मा के तन में कैसे? (किसी ने कहा– प्रजापिता ब्रह्मा।) प्रजापिता ब्रह्मा के तन में! प्रजापिता ब्रह्मा माना जो सारी प्रजा का पिता है, 500 करोड़ मनुष्य आत्माओं का पिता है, उस प्रजापिता ब्रह्मा के तन में बाप बैठा हुआ है। तो ज़रूर उसको यहाँ याद करना पड़े। कहाँ याद करना पड़े? जहाँ प्रजापिता वहाँ परमपिता परमात्मा को याद करना पड़े। ऐसे नहीं परमधाम में याद करना है। बाप नीचे बैठा हुआ है और हम याद करें ऊपर को, तो राइट हुआ या रॉंग? ये तो रॉंग हो गया। बाप तो नीचे, (पुरानी) सृष्टि को नई सृष्टि को बनाने के लिए आया हुआ है ना! पुरानी सृष्टि का विनाश कराने के लिए आया हुआ है ना! और हम उसको ऊपर याद करें! इसलिए एक मुरली में बोला हुआ है– **"जो मुझे ऊपर याद करते हैं वो हैं शूद्र सम्प्रदाय।"** फिर मुरली में बोला है– **"मुझे मेरे परमधाम में याद करो।"** ये तो दो बातें हो गई! परमधाम में याद करें या नीचे याद करें? परमधाम का मतलब ही है बड़े ते बड़ा धाम, परे ते परे धाम। धाम माने घर। परमात्मा भी साकार तन में आता है, पर्सनैलिटी लेकर के आता है तो उस पर्सन को उस व्यक्ति को रहने के लिए भी कोई स्थान चाहिए। कोई अपना विशेष स्थान, जिसको कहा जाता है मधुबन। जिसके लिए कहते हैं– मधुबन में मुरलिया बाजे। जहाँ–2 मिनी मधुबन बनावेंगे वहाँ–2 बाप आवेंगे, मुरली चलावेंगे। बाप मधुबन में ही आवेंगे, दूसरी जगह नहीं आवेंगे–

ऐसे अंजाम किया ना! तो मधुबन हुआ बाप का घर। वो परे ते परे घर है। माना सबकी बुद्धि में वो घर नहीं बैठेगा कि ये बड़े ते बड़ा घर है। तुम बाप के विशेष बच्चे हो, बड़े बच्चे, बड़ेल्ले बच्चे। एल्डर ब्रदर कहते हैं ना! बड़ा भाई। तो उन बड़े बच्चों की ही बुद्धि में बैठता है वो घर, औरों की बुद्धि में ये बात बैठेगी ही नहीं कि ये बड़े ते बड़ा घर है।

तो परमधाम का रहने वाला है, इसका मतलब ये नहीं है कि वो परमधाम कोई ऊपर ही है। मुरली में बोला है– **"तुम बच्चे परमधाम को इसी सृष्टि पर उतार लेंगे।"** तो इस सृष्टि पर परमधाम कैसे उतरेगा? बाप का वो स्थान मधुबन एक ऐसा वायब्रेशन वाला स्थान बन जावेगा, ऐसा वायुमंडल वाला बन जावेगा, जिसमें सब बच्चे आत्मिक रूप में स्थिर होने वाले होंगे, देहभान को भूले हुए होंगे। अपनी अंडे मिसल आत्मा उनको याद रहेगी। स्मृति में रहेगी। परमधाम में आत्माएँ किस रूप में रहती हैं? अंडे रूप में। बिंदु रूप में। ऐसी निःसंकल्पी स्टेज जहाँ बच्चों की संगठित रूप में बनी हुई हो, वही परमधाम हो गया। वो ही बाप का घर हो गया।

तो तुम जानते हो कि ब्रह्मा के तन में बाप आया हुआ है। तो ज़रूर उसको याद यहाँ करना पड़े। ऊपर में नहीं बैठा है। यहाँ आया हुआ है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर आया हुआ है। ये पुरुषोत्तम संगमयुग, युग कहाँ होते हैं? नीचे साकार सृष्टि पर होते हैं या ऊपर होते है? नीचे होते हैं। बाप पुरुषोत्तम संगमयुग पर आया हुआ है। बाप कहते हैं– मैं तुमको इतना ऊँच बनाने के लिए यहाँ आया हुआ हूँ। तो तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे ना! बाप कहते हैं मैं तन में बैठा हुआ हूँ, तो इस तन में मुझे याद करो।

भल बिंदी बुद्धि में याद नहीं आती है, बार–2 भूल जाती है। क्या? हमारी याद तो प्रवृत्ति की होनी चाहिए। तन भी याद आवे और तन में बिंदी आत्मा भी याद आवे। कोई शरीर में से बिंदी आत्मा निकल जाती है तो शरीर को क्या कहते हैं? मुर्दा। तो मुर्दे को भी याद नहीं करना; तन में बिंदु आत्मा को याद करना। भल बिंदी बुद्धि में से खिसक जाती है, नहीं याद आती। अच्छा, शिवलिंग को तो याद करो। क्या कहा? बिंदी बुद्धि में से खिसक जाती है, बिंदु तो छोटा रूप है, सूक्ष्म रूप है, तो बड़े रूप को, लिंग रूप को तो याद करो। लिंग रूप का मतलब क्या? लिंग माना? तन। वो तन जो कि निराकारी स्टेज़ में टिकने वाला है। उस तन को याद करो जिसको निराकारी स्टेज का वरदान मिला हुआ है। ऐसी निराकारी स्टेज वाले उस तन को भी याद करेंगे तो तुम्हारी भी अवस्था कैसी बनेगी? निराकारी बनेगी ना! तो बड़े रूप को याद करेंगे उसमें भी फायदा है। ऐसे नहीं नुकसान है। हाँ, साथ–2 बिंदु को याद करेंगे तो ज़्यादा फायदा है। सोने में सुहागा है। अति उत्तम है। लेकिन मान लो, अगर कभी अवस्था बहुत खराब हो रही है, देहभान ज़्यादा ही खींच रहा है, तो उस साकार रूप को भी याद करेंगे जो निराकारी स्टेज में टिकने वाला है तो भी फायदा होगा; नुकसान नहीं होगा। बड़े रूप शिवलिंग को याद करेंगे तो भी पाप कटेंगे। बड़े रूप पर हिरे हुए हो? बड़े रूप को याद करने के लिए प्रैक्टिस पक्की पड़ी हुई है? अच्छा, बड़ा ही सही, मतलब शिवबाबा को याद करो। क्या? मतलब क्या है? शिवबाबा को याद करो। ये नहीं कहा शिवबाप को याद करो। शिवबाप माना बिंदु–2 आत्माओं का बाप बिंदु। ऐसे मुरली में कभी नहीं बोला शिवबाप को याद करो। नहीं। शिवबाबा को याद करो। बाबा जब कहेंगे तो ज़रूर ग्रैन्डफादर है। ग्रैन्डफादर है, तो ज़रूर तन के अंदर होना चाहिए। बिंदु रूप में वो हम आत्माओं का बाप है। हम आपस में बिंदु–2 आत्मा–2 भाई–2 हैं; दूसरा कोई सम्बंध नहीं बनता। जब शरीर में प्रवेश होता है तो ढेर के ढेर सम्बंध बन जाते हैं। उनमें ग्रैन्डफादर का भी सम्बंध बनता है। तो ग्रैण्डफादर को बड़े रूप में भी याद कर सकते हो। भक्तिमार्ग में भी शिव को याद करते हैं ना! बड़े को भी याद किया तो भी तुम्हारे सभी पाप कट जावेंगे। क्या बोला मुरली में? छोटा रूप तुमको याद नहीं आता है, तो तुम प्यार से अगर बड़े रूप को भी याद करेंगे तो भी तुम्हारे सब पाप कट जावेंगे। लेकिन शर्त क्या है? निरंतर याद करो। क्या? याद में अंतर नहीं पड़ना चाहिए। बीच में कोई दूसरा याद नहीं आना चाहिए। दूसरे का याद आना माना व्यभिचारी याद और व्यभिचारी याद करेंगे तो घाटा होगा। पाप भस्म नहीं होंगे। अग्नि तेज़ नहीं होगी। मध्यम अग्नि हो जावेगी।

पूछते हैं– हम कैसे याद करें? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें? बहुतों को ये प्रश्न उठता है। बाबा कहते हैं– याद तो आत्मा को करना है; परंतु शरीर भी ज़रूर याद आवेगा। क्या? आत्मा तो सुप्रीम सोल, आत्मा को याद करना है;–लेकिन वो जिसमें प्रवेश करता है वो भी ज़रूर याद आवेगा। क्यों? ज़रूर क्यों? नहीं याद करते उसको, क्यों याद आवेगा? ज़रूर इसलिए याद आवेगा कि बिना उस शरीर में प्रवेश करे परमात्मा सृष्टि का कोई कार्य सम्पन्न नहीं कर सकता और सद्गुरू के रूप से कर्म को कराने वाला है। खुद करे या न करे; बच्चों से ज़रूर कराता है। तो कराने वाला भी प्रैक्टिकल में चाहिए, ऐसे नहीं बिंदु कराता है। नहीं। प्रैक्टिकल में कोई है जो हमसे कराता है।

बाबा कहते हैं पहले याद आत्मा को करना है। शरीर ज़रूर याद आता है। पहले शरीर, फिर आत्मा। याद करेंगे तो पहले क्या याद आएगा? पहले शरीर याद आएगा। क्यों? शरीर क्यों याद आएगा? पता कैसे चलेगा कि हमने सुप्रीम सोल ज्योति बिंदु को ही याद किया, दूसरी कोई आत्मा को याद नहीं किया? आत्माएँ–2 तो सब बिंदु–2। कीड़े–मकोड़े, पशु, पक्षी, 500 करोड़ मनुष्य आत्माएँ, सब बिंदु। आपको कैसे पता चलेगा कि ये बिंदु जो है वो ही सुप्रीम सोल है, दूसरा बिंदु नहीं है? कैसे पता चलेगा? नहीं पता चलेगा ना! पता तो तब ही चलेगा जब वो मुकर्रर रथ में प्रवेश करके उस कार्य को प्रैक्टिकल में सम्पन्न करने वाला बने, जो कार्य दुनियाँ में कोई न कर सके। ऐसा पक्का प्रूफ उस तन के द्वारा मिलना चाहिए, तब ही तो कहेंगे ये सुप्रीम सोल है। जैसे मुरली 27.10.74 पृ.2 के मध्य में बोला– **"पता कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब आकर के ज्ञान सुनाते हैं।"** तो पता पड़ जाता है कि ऐसा ज्ञान तो सिवाय परमपिता परमात्मा के और कोई सुना ही नहीं सकता। तो वो कर्म की विशेषता है, जो आत्माओं के पार्ट से परमात्म पार्ट को भिन्न साबित कर देती है। तो पहले शरीर याद आवेगा फिर आत्मा याद आवेगी।

बाबा इनके शरीर में बैठा है, तो शरीर भी ज़रूर याद पड़ेगा। जो ऊपर में बाप को याद करते होंगे तो उनका है भक्तिमार्ग। क्या कहा? वो तथाकथित ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ कौन–से मार्ग के हो गए? भक्तिमार्ग। क्योंकि उन्हों को परमात्मा बाप के ऑक्यूपेशन का पता ही नहीं; इसलिए वो उनको ऊपर में याद करते हैं। ऑक्यूपेशन कहाँ किया जाएगा, ऊपर या नीचे? ऑक्यूपेशन माना धंधा। परमात्मा बाप जो धंधा करेगा वो ऊपर करेगा या नीचे करेगा? बाप का धंधा है पतितों को पावन बनाने का, वो धंधा ऊपर बैठ के करेगा या नीचे बैठ के करेगा? पतित कहाँ हैं? ऊपर में? पतित तो नीचे बैठ हुए हैं, तो धंधा कहाँ करेगा? नीचे बैठ के करेगा ना! तो जो ऊपर याद करते हैं वो है भक्तिमार्ग। न उनके नाम का उनको पता है, न रूप का पता है, न देश का पता है, न काल का पता है; इसलिए वो हैं भक्तिमार्ग वाले। ऐसे ही अंधश्रद्धा पूर्वक याद करते रहते हैं। कौन? तथाकथित ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ माना ब्राह्मण। तुम तो हो सच्चे ब्राह्मण, ब्रह्मा की औलाद। उन ब्राह्मणों से पूछो तुम्हारा ब्रह्मा कहाँ है? तो कहेंगे ऊपर है। सूक्ष्म वतन में बैठा है। तुम्हारा बाप ब्रह्मा ऊपर बैठा है और तुम नीचे आ गए! तुम कहाँ से नीचे आ गए? संगमयुग है तो संगमयुग में ब्रह्मा बाप भी तो चाहिए ना! उन ब्राह्मणों को पता नहीं है, वो ऊपर में याद करेंगे और तुम कहाँ याद करोगे? तुम नीचे याद करोगे।

मैं यहाँ इस शरीर में आकर के कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है जहाँ अब तुमको जाना है। क्या कहा? किसके तन से ये वाक्य बोला? दादा लेखराज ब्रह्मा के तन में बैठकर के सुप्रीम सोल बाप ने ये वाक्य बोला। क्या बोला? फिर से सुनो– मैं यहाँ इस शरीर में आकर कहता हूँ। किस शरीर में आकर कहता हूँ? दादा लेखराज ब्रह्मा के तन में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है। कहाँ याद करना है? तुमको याद वहाँ करना है, जहाँ अब जाना है। कहाँ जाना है? मैं इस ब्रह्मा के तन में बैठकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है जहाँ अब तुमको जाना है। कहाँ जाना है? ज़ोर से बोलो! एडवांस पार्टी में ना! तो एडवांस पार्टी का कार्य कहीं चल रहा होगा ना! तो वहाँ याद करना, माना सूक्ष्म वतन में? (किसी ने कहा– नहीं।) सूक्ष्मवतन कोई ऊपर नहीं है। ज़रूर वो ब्राह्मण जिन्होंने अपनी बुद्धि की सूक्ष्म स्टेज़ बनाई है, मनन–चिंतन–मंथन की सूक्ष्म स्टेज़ बनाई हुई है, ऐसे ब्राह्मणों का जट्ठा/ज़खीरा जहाँ इकट्ठा हुआ पड़ा है, संगठन इकट्ठा हुआ पड़ा है, वहाँ मुझे याद करना है। माना मधुबन। वहाँ तुमको जाना है। यानि 68 से पहले की वाणी है, तो पहले ही इशारा दे दिया कि परमात्म पार्ट कहीं दूसरी जगह चलेगा। तुमको भी जाना है। तुम्हारी मन बुद्धि को भी वहाँ ट्रांसफर होना है। ऐसे नहीं तुमको यहाँ याद करना है। कहाँ? ब्रह्मा के तन में। इसलिए ब्रह्मा का फोटो रखने के लिए मना कर दिया। तुम बच्चों को ब्रह्मा का फोटो नहीं रखना है।

ऐसे नहीं सम्मुख आने से याद रह सकती है, बाहर जाने से याद भूल जाएगी। ऐसी कोई बात नहीं है। विलायत में बच्चियाँ हैं। सन्मुख में तो नहीं हैं। तो जहाँ भी हो, बाबा को याद करना। बहुत प्यार से याद करो। जैसे सजनी साजन को बहुत प्यार से याद करती है। चिट्ठी नहीं आती है तो बहुत हैरान हो जाती है। चिट्ठी तो तब आएगी जब प्रैक्टिकल में होगा। प्रैक्टिकल में होगा ही नहीं तो चिट्ठी कहाँ से आएगी? तुम सजनियों को बहुत धक्के खा–खाकर के ये साजन मिला। कितने जन्म धक्के खाए? 63 जन्म तुम बच्चों ने धक्के खाए तब ये सलोना साजन तुमको मिला। तो अब कितने प्यार से याद करना चाहिए! भट्ठी बनेगी तो दो–तीन दिन अच्छे बीतेंगे। ऐसे लोग समझते हैं कि बाबा भट्ठी का प्रोग्राम रख दो या मधुबन से भट्ठी करने का प्रोग्राम आया है– भट्ठी का प्रोग्राम करो। सोचते हैं कि दो/तीन दिन अच्छी भट्ठी चलेगी, अच्छी अवस्था बन जाएगी। अब इसमें तो संगठन का सहयोग मिल जाता है। क्या? भट्ठी में बैठकर के याद करेंगे तो संगठन का सहयोग मिल जावेगा। ये

आधार भी बच्चों को नहीं रखना चाहिए। क्यों? संगठन का आधार भी आधार हो गया क्या? हाँ। ये भी आधार हो गया। इब्राहीम, बुद्ध, क्राईस्ट, गुरूनानक ने आकर के क्या किया? मंदिर, मस्ज़िद, गिरजाघर, गुरूद्वारे बनाय दिए। उनमें सब इकट्ठे होकर के संगठन की याद में, परमात्मा की याद में बैठने लगे, तो संगठन का आधार हुआ ना! संगठन का आधार लेने वाले निराधार सितारे हुए क्या? हुए? तो संगठन मिल जाए ऑटोमेटिक तो इसमें हर्जा नहीं, संगठन का लाभ ले लेना चाहिए; लेकिन आशा नहीं रखनी चाहिए कि संगठन हो तब हमारी याद अच्छी बने। नहीं। संगठन का आधार भी नहीं रखना है। कभी सहयोग मिल सकता है संगठन का और कभी नहीं भी मिल सकता। अभी तो शांति की ये अवस्था चल रही है दुनियाँ में; लेकिन विनाश होगा, चारों तरफ भाग–दौड़ पड़ी होगी, तो उस समय संगठन का आधार मिलेगा? नहीं मिलेगा ना! तो फिर बाप को याद नहीं करेंगे क्या? अवस्था को अच्छा नहीं बनाएँगे क्या? अगर उस समय ये आधार पक्का हुआ पड़ा होगा कि आधार मिलेगा संगठन का तो हमारी अवस्था बढ़िया बन जाएगी, माउण्ट आबू में जाकर के बैठ जाएँगे या मधुबन में जाकर के बैठ जाएँगे, ऐसे नहीं। स्पष्ट बोला। क्या बोला? संगठन के आधार की आकांक्षा नहीं रखनी है। अभ्यास निराधार का होना चाहिए। कोई आधार नहीं। आसमान में कौन–से सितारे चमकते हैं? वो किसी का आधार लेकर के चमकते हैं क्या? निराधार सितारे चमकते हैं, किसी का आधार नहीं। तो ऐसे ही सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो चमकने वाले सितारे हैं, जो धरती के चैतन्य सितारे हैं, जो संसार में प्रत्यक्ष होने वाले हैं, संसार की नज़रों में समाय जाने वाले हैं, वो परमात्मा बाप के चैतन्य सितारे किसी भी आधार पर चलने वाले नहीं होंगे। प्रोग्राम के आधार पर अपनी उन्नति का आधार बनाना– ये भी एक कमज़ोरी है। प्रोग्राम बनेगा तो हमारी अवस्था ऊँची उठेगी और प्रोग्राम नहीं बनेगा, 6 महीने हो गए, 8 महीने हो गए, कोई प्रोग्राम नहीं हुआ, हम लोगों की अवस्था कैसे बढ़ेगी! तो ये भी कोई अच्छे पुरुषार्थी के लक्षण नहीं है।

बाप कहते हैं– पहले शरीर को याद करके फिर आत्मा को याद करना है। आत्मा आधार किसका लेती है? शरीर का आधार लेती है। दूसरे को अगर करेंट देनी है तो फिर रात को सवेरे को याद में रहना है। यानि सवेरे रात में बैठकर के भी किसी को करेंट दे सकते हैं। आत्मा को देखना माना आत्मा को सर्चलाइट देना। लेकिन कैसे पता चलेगा कौन–सी आत्मा को हमने सर्चलाइट दी? आत्मा तो सभी बिंदु हैं। तो हमने कौन–सी आत्मा को सर्चलाइट दी? ये पता तो तब ही चलेगा जब हम उसके साकार शरीर को याद करेंगे। किसी आत्मा को करेंट देनी है तो क्या करेंगे? सिर्फ़ बिंदु आत्मा को याद करेंगे? या बिंदु आत्मा को करेंट देंगे, उससे काम चल जाएगा? नहीं। उसके शरीर को भी याद करना पड़े। तो ऐसे परमात्मा की भी याद है। परमात्मा बाप को भी जब हम प्रैक्टिकल में याद करें तो उसके प्रैक्टिकल पार्ट को भी याद करें। मैं जो हूँ, जैसा हूँ और जिस रूप में पार्ट बजाय रहा हूँ, उस रूप में मेरे को याद करो।

अगर पूरा ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठा है तो पूरा योग भी नहीं। क्या? ज्ञान अधूरा है। ज्ञान माना जानकारी। अगर बाप की पहचान, ज्ञान, जानकारी में कमी है तो पूरा योग नहीं लगेगा। तो पहले–2 क्या करना चाहिए? पहले बाप की पूरी जानकारी बुद्धि में बैठाना चाहिए। नहीं तो पूछते रहेंगे, बाप को कैसे याद करें? हमारा योग नहीं लगाता। शरीर से परे होने का अभ्यास होने के कारण यदि दो/चार मिनट भी अशरीरी बनेंगे तो मानों जैसे कि चार घंटे का तुम बच्चों को आराम मिल जावेगा। ऐसा समय आवेगा कि नींद के बजाय 4,5,8 मिनट अशरीरी बन जायेंगे और ऐसे अनुभव करेंगे जैसे शरीर को खुराक मिल गई। वैसे ये भी खुराक मिल जावेगी। शरीर तो पुराने रहेंगे, हिसाब–किताब तो पुराना होगा, सिर्फ़ उसमें ये एडिशन करते जाओ।

अभी बाप तुम बच्चों को आकर के ये यथार्थ बातें बतलाते हैं। बिंदी तुमको छोटी लगती है? अच्छा, बिंदी का घर तो बड़ा है। बिंदी का घर कौन–सा है? शरीर ना! बिंदी का घर तो बड़ा है। अच्छा, तो घर को याद करो। मुरली में बोलते हैं ना– **"बाप को याद करो, घर को याद करो, स्वर्ग के वर्से को याद करो।"** कहते हैं ना! तो तीन–2 बातें बताय देते हैं। कहते हैं अपने घर को याद करो। बाप को याद करो। स्वर्ग को याद करो। बाप के वर्से को याद करो। तो तीन–2 चीज़ों को याद करें या एक को याद करें? क्या करें? एक को याद करें ना! फिर तीन–2 बातें क्यों बता दी? वो तीनों अलग–2 चीज़ें नहीं हैं। एक में ही तीन हैं। तीन में ही एक है। जब कहते हैं बाप को याद करो तो ज़रूर सुप्रीम सोल की तरफ इशारा है। प्रजापिता बाप की तरफ इशारा है। वो भी बाप है बेहद का, जिसमें वो सुप्रीम सोल प्रवेश करके बाप बनता है प्रैक्टिकल में। फिर घर को याद करो, तो आत्मा का घर कौन–सा हुआ? शरीर हुआ ना! तो जिस शरीर में परमात्मा बाप प्रवेश करता है वो घर हुआ, उस घर को याद करो। वो भी एक ही बात हो गई। फिर वर्से को याद करो। तो लक्ष्मी–नारायण क्या हैं?

हमारा वर्सा है ना। नारायण को याद किया माना सारी सृष्टि रूपी वृक्ष के बीज को याद कर लिया। बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ है। बीज को याद किया माना सारे वृक्ष को याद का पानी दे दिया। सारी मनुष्य सृष्टि का बीज, उस बीज को याद करते रहो तो उस बीज में स्वतः ही सारी पावर भरी हुई है, सारे वृक्ष को याद की पावर मिल जावेगी। तो ये तीनों एक ही बात हो गई। बाप को याद करो वो भी एक ही बात। वर्से को याद करो, वो नारायण भी हमारा वर्सा है। जो सारे विश्व का मालिक है, विश्व का पिता है, विश्व का पति है, वो अगर हमारी मुट्ठी में आ जाए तो जैसे सारा वृक्ष, सारा विश्व हमारी मुट्ठी में आ गया। तो बुद्धि रूपी हथेली में उस वर्से को याद करो, चाहे बाप को याद करो, चाहे घर को याद करो, एक ही बात हो जाती है।

अभी तुम बच्चों की याद अर्थ सहित है। दुनियाँ में तो किसी को पता ही नहीं है। तुम जानते हो शिवबाबा बिंदी है। अच्छा, तुमको बिंदी छोटी लगती है तो उसका घर तो बड़ा है, तो घर को याद करो। बाबा भी वहाँ रहते हैं। कहाँ रहते हैं? घर में रहते हैं ना! बाप भी घर में रहते हैं। और तुम बच्चे भी कहाँ रहते हो? घर में रहते हो। सारी दुनियाँ की पैदाइश कहाँ से होती है? अरे! किसी की पैदाइश होती है तो कहाँ से होती है? किसके पेट से होती है? माँ के पेट से होती है ना। ब्राह्मणों की पैदाइश कहाँ से होती है? ब्रह्मा से होती है ना। तो ब्रह्मा का बुद्धिरूपी पेट वो हमारा घर हो गया ना! ब्रह्मा के बुद्धि रूपी पेट में ही तो बाप का प्रवेश होता है। तो वो बाप का घर हो गया। जो बाप का घर वो हम बच्चों का भी घर हो गया।

बीच–2 में एक–दो मिनट भी तुम निकाल करके इस बिंदु रूप की प्रैक्टिस करो। जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते हुए ट्रैफिक को रोक करके दो/तीन मिनट साइलेंस में चले जाते हैं। प्रैक्टिस कराते हैं। सारे कार्य को स्टॉप कर देते हैं। आप भी कोई कार्य करते हो वा कोई से बात करते हो या कोई भाषण करते हो, तो बीच–2 में ये संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप कर देना चाहिए। क्या? अगर याद की अच्छी प्रैक्टिस करना चाहते हैं, ये कम्प्लेंट रहती है कि हमको बिंदु याद नहीं आता, तो क्या करें? बीच–2 में सारा काम एकदम बंद करके और दो–पाँच मिनट उस याद में टिक जाएँ, निराकारी स्टेज़ में। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को, चाहे शरीर के द्वारा चलते हुए कार्य को बीच–2 में रोक करके भी ये प्रैक्टिस पक्की कर देनी चाहिए। तो याद की अवस्था बहुत अच्छी हो जायेगी।

जो निवृत्तिमार्ग वाले होते हैं वो कभी भी प्रवृत्तिमार्ग वालों को राजयोग नहीं सिखाय सकते। निवृत्तिमार्ग वाले कौन? जो सिर्फ़ बिंदु को याद करते हैं वो हुए निवृत्तिमार्ग वाले। या जो कहते हैं कि सिर्फ़ बाबा ब्रह्मा को याद करो, साकार को याद करो, तो वो भी हो गए निवृत्तिमार्ग वाले। क्यों? क्योंकि आत्मा और शरीर की भी प्रवृत्ति है। हमारी याद भी प्रवृत्ति की है। प्रवृत्तिमार्ग की दुनियाँ में हमको जाना है तो हमारी याद भी प्रवृत्ति की होनी चाहिए। साकार भी याद आए और साकार के साथ–2 निराकार बिंदु भी याद आए। जो सिर्फ़ निराकार बिंदु को याद करने वाले हैं वो राजयोगी नहीं हो सकते, न राजयोग सिखाय सकते हैं। जो सिर्फ़ साकार को याद करने वाले हैं वो भी राजयोगी नहीं हो सकते। वो भी हठयोगी हैं। वो हठयोग सिखाएँगे; राजयोग नहीं सिखाएँगे। जो हठयोगी होते हैं वो कभी सरल नहीं होते हैं। टेढ़ी चाल वाले होते हैं।

जितना जो स्वयं सरल होगा उतना उनकी याद भी सरल होगी। अपने में सरलता की कमी के कारण याद भी सरल नहीं रहती। सरलता होती है कम, तो याद भी कम। बुद्धि जटिल होगी तो याद भी जटिल हो जावेगी। हठयोगी होंगे तो याद भी हठ पूर्वक बैठने से ही याद आवेगी। वो भी एक्यूरेट निरंतर याद नहीं हो सकती। सरल चित्त कौन रह सकेगा? जितना हर बात में स्पष्ट होगा, हर बात में साफ दिल होगा, उतना सरल होगा। कहते भी हैं सच्चे दिल पर साहब राज़ी। तो बाबा साहब किसको ज़्यादा याद आवेगा? जो साफ दिल वाले बच्चे होंगे उनको बाबा खूब याद आवेगा। जिन्होंने अपने बुद्धि रूपी शीशे को, चित्त को, निर्मल नहीं बनाया, बाबा को पूरा पोतामेल नहीं दिया, जो सच्चाई–सफाई से चलने वाले नहीं हैं, दुराव–छुपाव से चलते हैं, उनका चित्त कभी निर्मल नहीं हो सकता। उस चित्त में कभी बाप की याद छप नहीं सकती। तो सरलता बहुत पहला गुण है– याद करने वालों के लिए।

विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जावेंगे। विचित्र माना? बिंदु और चित्र माना? साकार। तो बिंदु के साथ साकार की भी याद रहे तो चरित्रवान बन जावेंगे। अगर सिर्फ़ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। सिर्फ़ चित्र को याद किया या चित्र के साथ जो चरित्र है वो तो याद आएगा ही, सिर्फ़ उसी को याद किया तो चरित्र की याद रहेगी, विचित्र

भूल जाएगा। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आना चाहिए तो क्षिप्र गति भी होगी, तेज़ी से विकर्म भस्म होंगे, निरंतर याद भी रहेगी और सहज याद भी होगी।

याद में रहते हो ये कोई बड़ी बात नहीं है; लेकिन याद के साथ–2 सहज योगी भी हों और निरंतर योगी भी हों। अगर ये नहीं होता है तो समझो याद अधूरी है। तो सहज कब होगी? सिर्फ़ बिंदु को याद करेंगे तो सहज याद होगी? नहीं होगी। वो तो हठयोगियों की याद हो गई। हठयोगियों को हठ पूर्वक याद आती है। हाथ–पाँव बाँध करके बैठ जाएँगे तो याद आएगी, नहीं तो याद नहीं आएगी। कर्म करते याद नहीं आ सकती। निरंतर याद नहीं हो सकती।

आशुक–माशूक का भी एक–दो के शरीर से प्यार होता है। आशुक–माशूक दोनों देहधारी होते हैं। आशुक के सामने जैसे माशूक खड़ा हुआ रहता है। माशूक को फिर आशिक दिखाई पड़ेगा। अभी तुम आशुक हो परमपिता परमात्मा बाप के। एक है माशूक और बाकी सब आत्माएँ हैं आशुक। अभी वो निराकार परमात्मा बाप माशूक तुमको इस साकार द्वारा बैठ मत देते हैं, तो उनको याद करना चाहिए। क्या मिसाल दिया? आशुक–माशूक का मिसाल दिया। वो आशुक–माशूक एक–दूसरे को याद करते हैं। तुम क्या करो? तुम आशिक हो बाप माशूक है। बाप कभी आशिक नहीं होता। ये यहाँ अंतर है। बाप आशिक नहीं है; बाप सिर्फ़ माशूक और तुम बच्चे आशिक हो। तो आशिक जो बच्चे हैं वो माशूक बाप को बैठ याद करें। अभी निराकार बाप उस माशूक के द्वारा तुमको बैठ मत देते हैं, बुद्धि देते हैं कि मुझे बैठकर के याद करो। शिव की याद में आकर के बैठो; लेकिन और कोई याद न आवे। यहाँ तुमको मदद मिलेगी सवेरे। बाप की याद में सवेरे–2 बैठेंगे तो बाप से विशेष मदद मिलेगी। सारा दिन बाप को भी सर्विस करनी होती है बच्चों में प्रवेश करके दूसरों की आत्माओं की सर्विस करने की; लेकिन सवेरे का टाइम बाप के लिए फ्री है। तो क्या करो? अमृतबेले बाप से वरदानों की झोली भरते रहो। अमृतबेला अगर सुहाला बनाया तो सारा दिन सुहेला जाएगा। ये है बड़ी ते बड़ी पुरुषार्थ करने की प्वाइन्ट– अमृतबेले को सुधारना।

बाबा टाइम देते हैं– रात को 9 बजे सो जाओ, फिर सवेरे दो/तीन बजे उठकर के याद करो। तुमको तो आँखें बंद भी नहीं करनी चाहिए; क्योंकि याद में बैठना है ना! आँखें खोलने से तुम बच्चों को डरना नहीं चाहिए कि आँख खोलकर के बैठेंगे, कोई सुंदर दिखाई पड़ जाएगा तो हमारी बुद्धि उधर चली जाएगी। नहीं। इससे पता चलेगा। क्या पता चलेगा? कि हमारी आँख कितनी कंट्रोल में हुई है। आँखें खुली हुई होते हुए भी मन–बुद्धि को ऐसा कंट्रोल करना है कि मन–बुद्धि ऐसी कंट्रोल्ड हो जाए जो आँख के सामने से कोई गुज़र जाए और मालूम भी न पड़े। इतनी याद पक्की हो। जैसे महबूब महबूबा को याद करता है, गहरी याद में जब समाया हुआ होता है तो सामने से कोई निकल जाता है, आँखें खुली हुई होती हैं और उसको पता ही नहीं चलता है कौन निकल गया। पूछा जाता है यहाँ से कौन गुज़र के गए? तो कहेंगे हमें नहीं मालुम। ऐसी याद पक्की होनी चाहिए। आँखें बंद करने की बात नहीं है। आँखें खोलने से डरना नहीं चाहिए। (ओम शांति)